Question Paper Comp. Outside Delhi 2017 सेट-1
CBSE कक्षा 12 हिन्दी (ऐच्छिक)

सामान्य निर्देशः

- इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।
- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- विद्यार्थी यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर लिखें।

खण्ड-'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (15)

लोक-कलाएँ जीवन के अंग-प्रत्यंग से जुड़ी रहती थीं। कठिन शारीरिक श्रम के काम संगीत से हलके किये जाते थे। पेड़ काटना, नाव चलाना, बोझ खींचना, चक्की पीसना आदि किसी-न-किसी प्रकार के संगीत से जुड़े होते थे। हर ऋतु के अपने गीत और नृत्य होते थे। जन्म, विवाह आदि के अवसर नृत्य और गायन के अवसर तो होते ही थे, उनसे चित्रांकन, मिट्टी की कलाएँ, काष्ठ शिल्प आदि भी संबद्ध होते थे। आर्थिक क्रियाओं में भी किसी-न-किसी तरह जाने-अनजाने कलाएँ प्रवेश पा जाती थीं। धर्म और जादू-टोने से भी कलाएँ असंपृक्त नहीं होती थीं। सच तो यह है कि धार्मिक क्रियाओं और लोक-कलाओं में सावयवी संबंध था। यह कहना शायद उचित न हो कि शुद्ध सौंदर्यवादी दृष्टि से कलात्मक सूजन होता ही नहीं था, परन्तु यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कलाओं का उपयोगवादी पक्ष किसी भी दृष्टि से गौण नहीं था। आद्यकला-सृष्टियों के कई रूपों के संबंध में आज हम केवल अनुमान ही कर सकते हैं, उनके व्यवहारवादी पक्षों पर प्रामाणिक टिप्पणी करना संभव नहीं है। अल्जीरियाई सहारा मरुस्थल के मध्य आश्चर्यजनक चित्रकला के नमूने अवशिष्ट हैं, जो कठिन यात्रा के बावजूद हर वर्ष हजारों दर्शकों को अपनी ओर खींचते हैं। आदिमानव ने इन चित्रों की रचना क्यों की? आज इस प्रश्न का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया जा सकता। ये चित्र सौंदर्यबोध को तो प्रमाणित करते हैं, पर शायद उनके साथ कोई धार्मिक या आर्थिक कार्य भी जुड़े हों। यही प्रश्न भोपाल के समीप भीमबेटका के चित्रों को देखकर उठता है। आदिमानव ने यूरोप में 'विलेनडार्फ की वीनस' की प्रसिद्ध मूर्ति क्यों गढ़ी? सिंधु सभ्यता से जुड़ी चित्रकला और मूर्तिकला के पीछे मूल भावना क्या थी? ये प्रश्न ऐसे हैं जिनका सीधा उत्तर देना संभव नहीं है किंतु निश्चित है कि ये धरोहरें मानव मन की और उसकी संस्कृति की विकास यात्रा को समझने में सहायक हो सकती है। संस्कृति-विश्लेषण की नयी विधाओं ने इस सामग्री का उपयोग कर जीवनदर्शन, सामाजिक मूल्य, सांस्कृतिक प्राथमिकताओं आदि पर गंभीर शोध किया है, जो संस्कृतियों के बाह्यरूप मात्र को देखकर संभव नहीं होता। ये कलाएँ सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति करती थीं और उनके द्वारा व्यक्तियों और समूहों को सृजनात्मक आनंद भी प्राप्त होता था।

i. **उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)**
ii. **कैसे कह सकते हैं कि श्रमसाध्य कार्य भी लोक संगीत से जुड़े रहते थे? (2)**
iii. **दो बिंदुओं का उल्लेख कर पुष्टि कीजिए कि लोक-कलाएँ जीवन के अंग-प्रत्यंग से जुड़ी होती थी? (2)**
iv. **अल्जीरिया और भीमबेटका का उल्लेख क्यों हुआ है? (2)**

v. **लोक-कलाओं की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (2)**
vi. **कुछ प्रश्नों का सीधा उत्तर देना संभव क्यों नहीं है? (2)**
vii. **लोककलाओं की प्राचीन धरोहरें किन बातों को समझने में सहायक हो सकती हैं? (2)**
viii. **कैसे कह सकते हैं कि धार्मिक क्रियाओं और लोककलाओं में परस्पर गहरा संबंध था? (2)**

उत्तर-

i.
- लोक कलाओं का महत्त्व
- संस्कृति और लोक कलाएँ
  (अन्य उपयुक्त शीर्षक पर अंक दिए जाएँ)

ii.
- श्रमपूर्ण कार्यों की थकान दूर करने के लिए संगीत का उपयोग
- पेड़ काटना, नाव चलाना, बोझ उठाना या चक्की पीसना जैसे कार्यों में लोक संगीत का उपयोग कर आंतरिक ऊर्जा का संचार किया जाता था।

iii.
- श्रम के काम में लोक संगीत का उपयोग
- जन्म, विवाह आदि अवसरों पर गीत, नृत्य एवं चित्रांकन
- धार्मिक क्रियाओं में भी लोक कलाओं का उपयोग
  (किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)

iv.
- अल्जीरिया और भीमबेटका में आदि-मानवों द्वारा रचित चित्रकला के नमूने
- इन प्रारंभिक कला रूपों में सौंदर्य और आकर्षण

v.
- लोक जीवन की विभिन्न स्थितियों एवं क्रियाओं से इनकी उत्पति
- मानव मन की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम

vi.
- सिंधु या अन्य प्राचीन सभ्यताओं के विषय में प्रामाणिक तथ्यों की कमी
- प्राचीन समाज और उनकी कला के बीच के जटिल संबंधों की पूरी जानकारी का अभाव

vii.
- मानव मन की तथा उसकी संस्कृति की विकास यात्रा को समझने में
- तत्कालीन समाज के जीवन दर्शन और सामाजिक मूल्यों को समझने में
  (किसी एक बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)

viii. विभिन्न धार्मिक क्रियाओं में लोक कला के विभिन्न रूपों यथा गीत, संगीत, चित्रकला तथा मूर्तिकला का उपयोग

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×5=5)

प्रातः बेला
टटके सूरज की ओर देखे कितने दिन बीत गए
नहीं देख पाया पेड़ों के पीछे
उसे छिप-छिपकर उगते हुए
नहीं सुन पाया भोर होने से पहले चिड़ियों का कलरव
नहीं पी पाया दुपहरी की बेला

आम के बगीचे की झुर-झुर बहती शीतल बयार।
आज भी जाता होगा
किसानों, औरतों, बच्चों-बेटियों का जत्था
होते ही उजास गेहूँ काटने
घर के पिछवाड़े डालियों पत्तियों में झिलमिलाता
डूबता सूरज बहुत याद आता है।
अपने चटक रंगों को लिए गाँव के बगीचे में
झरते हुए पीले-पीले पत्ते कब देखूंगा?
उसकी डालियों शाखाओं पर
आत्मा को तृप्त कर देने वाली
नई-नई कोपलें कब देखूँगा?

i. **उगते सूर्य के बारे में कवि ने क्या कल्पना की है?**
ii. **गाँव में सुबह होने वाली हलचल का वर्णन कीजिए।**
iii. **कवि के मन में डूबते सूरज का कैसा चित्र है?**
iv. **गाँव के बगीचे में दुपहरी और पतझड़ की कवि मन की स्मृतियाँ अपने शब्दों में लिखिए।**
v. **भाव स्पष्ट कीजिए:**
आत्मा को तृप्त कर देने वाली
नई-नई कोपलें कब देखूँगा?

उत्तर-

i. पेड़ों के पीछे से छिप-छिपकर उगते हुए सूर्य की
ii.
- भोर होने से पहले चिड़ियों का कलरव
- किसानों, औरतों, बच्चों-बेटियों के जत्थों का गेहूँ काटने/खेतों में काम करने जाना
(किसी एक बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)

iii. घर के पिछवाड़े डालियों, पत्तियों में झिलमिलाता डूबता सूरज
iv.
- दुपहरी बेला में आम के बगीचे में बहती शीतल बयार
- गाँव के बगीचे में झरते हुए पीले-पीले पत्तों की स्मृतियाँ

v.
- पतझड़ के बाद निकलने वाली कोंपलों को देखने की चाहत
- नवीन कोंपले नव जीवन की / भविष्य की आशा का प्रतीक
(किसी एक बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)

खण्ड-‘ख’

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : (10)

i. सैनिक का जीवन
ii. प्रगतिपथ पर भारत
iii. मेरा प्रिय कवि
iv. वन रहेंगे, हम रहेंगे

उत्तर- किसी एक विषय पर निबंध अपेक्षित:

- भूमिका/उपसंहार (1+1)
- विषय-वस्तु (6)
- भाषा एवं प्रस्तुतीकरण (2)

4. आपका युवक मंगल दल मुहल्ले के एक उद्यान का रखरखाव स्वयं करना चाहता है। अपनी योजना का संक्षित विवरण देते हुए ज़िला उद्यान अधिकारी को अनुमति प्रदान करने हेतु पत्र लिखिए। (5)
उत्तर- पत्र-लेखन:

- आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ (1)
- विषय-वस्तु (3)
- भाषा (1)

अथवा

भारतीय समाज में लिंग के आधार पर व्यवहार में भेदभाव करने की समस्या पर किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और समाधान का एक उपाय भी सुझाइए।
उत्तर- पत्र-लेखन:

- आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ (1)
- विषय-वस्तु (3)
- भाषा (1)

5. निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर लिखिए : (1×5=5)

i. 'समाचार' शब्द को परिभाषित कीजिए।
ii. प्रिंट मीडिया का महत्त्व दो बिंदुओं में समझाइए।
iii. मीडिया को लोकतंत्र का चौथा खंभा क्यों कहा जाता है?
iv. संपादक के दो मुख्य कार्यों का उल्लेख कीजिए।
v. खोजी पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर-

i. किसी भी ऐसी ताजी घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रुचि हो और जिसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा हो।
ii.
   - छपे हुए शब्दों में स्थायित्व
   - अपनी जरूरत, गति एवं क्रम से पढ़ने की सुविधा
iii. लोकतंत्र का चौथा स्तंभ मीडिया-
   समाज एवं शासन संबंधी समस्याओं को उजागर कर समाधान ढूँढ़ना, व्यवस्था की निगरानी एवं पहरेदारी करना
   (किसी एक तथ्य का उल्लेख अपेक्षित)
iv.
   - समाचारों की अशुद्धियों को दूर करके उसे पठनीय बनाना
   - महत्त्व के अनुरूप समाचारों की जगह/क्रम एवं विस्तार तय करना
   - द्वारपाल की भूमिका
     (किसी एक बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)
v. गहन छानबीन करके ऐसे तथ्यों और सूचनाओं को समाने लाना जिन्हें दबाने या छुपाने का प्रयास किया गया हो।

6. 'भारतीय कृषक की असहायता' अथवा 'रोजगार के बढ़ते अवसर' पर एक आलेख लिखिए। (5)
उत्तर- आलेख अथवा फीचर-लेखन:-

- प्रस्तुति (2)
- विषय वस्तु (2)
- भाषा (1)

खण्ड-'ग'

7. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (8)
किसी अलक्षित सूर्य को
देता हुआ अर्घ्य
शताब्दियों से इसी तरह
गंगा के जल में
अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह शहर
अपनी दूसरी टाँग से
बिलकुल बेखबर।
उत्तर- किसी अलक्षित सूर्य ………………..बिलकुल बेखबर।

- संदर्भ-

        - कवि - केदारनाथ सिंह
        - कविता - ‘बनारस’
- प्रसंग - बनारस की प्राचीनता और आध्यात्मिकता का वर्तमान संदर्भों में उल्लेख
- व्याख्या बिंदु -
    - समूचा शहर शताब्दियों से संस्कृति की उपासना में लीन
    - शहर में भक्ति और मुक्ति के प्रयास चल रहे हैं।
    - आधुनिकता की चकाचैंध और आर्थिक विकास की होड़ से परे/बेखबर है शहर
    - आध्यात्मिकता की एक टाँग पर टिका शहर भौतिक विकास रूपी दूसरी टाँग से बेखबर है।
- विशेष -
    - सरल एवं प्रवाहमयी खड़ी बोली
    - मुक्त छंद, अतुकांत
    - ‘अर्घ्य’ और ‘टाँग’ का प्रतीकात्मक
    - प्रयोग
    - तत्सम शब्दों का प्रयोग -
    - ‘अलक्षित’, ‘अर्घ्य’
    - दृश्य-बिम्ब

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर संक्षेप में दीजिए: (3+3=6)

i. **‘दीप अकेला’ का प्रतीकार्थ समझाते हुए लिखिए कि व्यष्टि का समष्टि में विलय क्यों और कैसे संभव है?**
ii. **युधिष्ठिर जैसा संकल्प का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए सत्य और संकल्प का अंतःसंबंध स्पष्ट कीजिए।**
iii. **“महीं सकल अनरथ कर मूला” भरत के इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।**

उत्तर-

i.
- दीप अर्थात व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न होकर भी अकेला है।
- व्यष्टि से ही समष्टि निर्माण तथा व्यष्टि के समष्टि में विलय से ही उसकी महत्ता और सार्थकता
- व्यक्ति द्वारा अपने विशिष्ट गुणों का समाज/राष्ट्र हित में उपयोग करके

ii.
- युधिष्ठिर की कथा के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि सत्य की पहचान कठिन, क्योंकि सत्य परिवर्तनशील होता है।
- सत्य के प्रति संशयात्मक स्थिति बनी रहती है।
- युधिष्ठिर जैसा संकल्प लेकर प्रत्येक स्थितियों में दृढ़ रहकर ही सत्य के अनुभव को पाया जा सकता है।
  (किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)

iii.
- आत्म-परिताप करते भरत राम के वन गमन एवं उससे हुए कष्टों के लिए स्वयं को ही दोषी मानते हैं।
- भरत जानते हैं कि श्रीराम कोमल, कृपालु और भातृप्रेम से युक्त है जो किसी के भी मन को दुखी नहीं करते।

- श्रीराम के समक्ष अपने दोषों को स्वीकार करते हुए भरत अत्यंत भावुक होते हैं।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्यांशों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए: (3+3=6)

i. टूटहिं बुंद परहिं जस ओला। बिरह पवन होइ मारे झोला।।
केहिक सिंगार को पहिर पटोरा। जियँ नहिं हार रही होइ डोरा।।

ii. ऊँचे तरुवर से गिरे
बड़े-बड़े पियराए पत्ते
कोई छह बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो
खिली हुई हवा आई, फिरकी-सी आई, चली गई।

iii. हेम कुंभले उषा सवेरे
आती दुलकती सुख मेरे
मदिर ऊँघते रहते जब
जगाकर रजनी भर तारा

उत्तर-

i. टूटहिं बुंद.....................................होइ डोरा।।
   - भाव सौंदर्य-
     - माघ के महीने में विरह संतप्त रानी नागमती की मनोदशा का मार्मिक चित्रण
     - नागमती की आँखों से निकलने वाले आँसू शीत के प्रभाव से ओलों के समान प्रतीत होते हैं।
     - विरहाकुल नागमती शृंगारविहीन है क्योंकि वह स्वयं हार के डोरे के समान पतली हो गई है।
       (किसी एक बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)
   - शिल्प सौंदर्य-
     - भाषा - अवधी
     - छंद - चौपाई
     - रस - वियोग श्रृंगार
     - 'टूटहिं बुंद परहिं जस ओला' में उत्प्रेक्षा अलंकार, 'पहिर पटोरा' में अनुप्रास अलंकार तथा संपूर्ण वर्णन में अतिशयोक्ति अलंकार

ii. ऊँचे तरुवर से ....चली गई।
   - भाव सौंदर्य-
     - प्रकृति में आए परिवर्तन वसंत ऋतु के आगमन की जानकारी देते हैं।
     - रोजमर्रा की बँधी जिंदगी में ऐसे परिवर्तनों को समझने का अवकाश नहीं
   - शिल्प सौंदर्य-
     - खड़ी बोली हिन्दी

- छंद मुक्त, अतुकांत
- ‘पियराए’, ‘फिरकी’ जैसे देशज शब्दों का प्रयोग
- ‘बड़े-बड़े’ - पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार, ‘फिरकी-सी आई’ - उपमा अलंकार, ‘गरम पानी से नहाई हवा’ - मानवीकरण अलंकार, ‘पियराए पत्ते’ - अनुप्रास अलंकार

iii. हेम कुंभ ले उषा............................रजनी भर तारा।

- भाव सौंदर्य-
    - उषाकालीन प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण
    - उषा रूपी सुंदरी आकाश में स्थित सुखों को स्वर्ण कुंभ में भर सूर्य किरणों द्वारा जन जीवन पर बरसा देती है।
- शिल्प सौन्दर्य-
    - खड़ी बोली हिन्दी
    - मुक्त छंद, अतुकांत
    - रूपक अलंकार, उषा का मानवीकरण, अनुप्रास अलंकार

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (6)

दुरंत जीवनशक्ति है। जीना भी एक कला है। लेकिन कला ही नहीं, तपस्या है, जियो तो प्राण ढाल दो ज़िंदगी में, मन ढाल दो जीवन-रस के उपकरणों में। ठीक है। लेकिन क्यों? क्या जीने के लिए जीना ही बड़ी बात है? सारा संसार अपने मतलब के लिए ही तो जी रहा है।

उत्तर- दुरंत जीवन शक्ति............................तो जी रहा है।

- संदर्भ-
    - पाठ - ‘कुटज’
    - लेखक - हज़ारीप्रसाद द्विवेदी
- प्रसंग - जीवन जीने के प्रति दृष्टिकोण
- व्याख्या बिंदु-
    - जीवन शक्ति से जीते हुए जीने को एक कला और तपस्या के रूप में देखना
    - जीवन का उत्साह एवं उमंग से जीना महत्त्वपूर्ण लेकिन कोई उद्देश्य अवश्य होना चाहिए
    - संसार अपने स्वार्थ के लिए जीता है लेकिन यह बड़ी बात नहीं है।
- विशेष-
    - खड़ी बोली
    - विचारात्मक शैली
    - तत्सम शब्दावली

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लिखिए : (4+4=8)

i. **'मनोकामना की गाँठ' को 'दूसरा देवदास' कहानी में अद्भुत, अनूठी क्यों कहा गया है? पारो और संभव की मनोदशा के संदर्भ में समझाइए।**
ii. **"मैं जहाँ जाता हूँ, छूँछे हाथ नहीं लौटता" 'कच्चा चिट्ठा' से उदाहरण देकर पुष्टि कीजिए।**
iii. **'सुमिरिनी के मनके' के आधार पर तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त मान्यताओं पर टिप्पणी कीजिए।**

उत्तर-

i.
- मनोकामना की गाँठ पारो और संभव दोनों ही बाँधते हैं।
- संभव और पारो के हृदय में प्रेम का स्फुरण
- मंसादेवी से मन्नत पूरी करने की कामना करना और वहीं दोनों का मिलना
- मनोकामना की गाँठ के तुरंत प्रभाव को स्वीकारते हुए पुनः मंसादेवी जाने की कामना

ii.
- ब्रज मोहन व्यास (लेखक) ने स्वयं के संदर्भ में कहा।
- पुरातात्विक वस्तुओं के संग्रह का शौक
- कौशांबी से लौटते समय लेखक अपना लोभ संवरण नहीं कर सका और एक गाँव से भगवान शिव की मूर्ति उठा लाया।

iii.
- वैदिक काल के हिन्दुओं में लॉटरी पद्धति से विवाह योग्य कन्या का चुनाव करने की परंपरा
- कन्या के समक्ष विभिन्न स्थानों से लाए गए मिट्टी के ढेले रखना
- कन्या द्वारा चुने गए ढेले के आधार पर ही विवाह का निर्णय करना
- आकाश में घूम रहे ग्रहों - मंगल, शनिचर आदि के आधार पर शुभ-अशुभ तथा शादी-विवाह आदि का निर्धारण
- जीवन के महत्त्वपूर्ण निर्णयों में अंधविश्वास और पाखण्ड का प्रभाव

12. रामचंद्र शुक्ल अथवा भीष्म साहनी के जीवन और रचनाओं का संक्षित परिचय देते हुए उनकी भाषा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (6)

उत्तर- रामचन्द्र शुक्ल

- जन्म एवं जीवन परिचय-
    - उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अगोना गाँव में जन्म
    - प्रारंभिक शिक्षा उर्दू, अंग्रेजी और फारसी में, इंटरमीडिएट तक विधिवत् शिक्षा
    - उच्चकोटि के आलोचक, इतिहासकार और साहित्य-चिंतक
- रचनाएँ-
    - हिन्दी साहित्य का इतिहास, हिन्दी शब्द सागर की भूमिका, चिंतामणि (चार खंड), रस-मीमांसा, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास आदि
- साहित्यिक विशेषताएँ एवं योगदान -
    - विवेचनात्मक शैली
    - साहित्यिक मानदण्डों का निर्धारण

- व्यंग्य और विनोद का प्रयोग
- जीवंत और प्रभावशाली गद्य
- व्यापक शब्द चयन और शब्द संयोजन तत्सम् शब्दों से लेकर प्रचलित उर्दू शब्दों का प्रयोग
- इतिहास लेखन एवं निबंध लेखन विधा में महत्त्वपूर्ण अवदान

अथवा

भीष्म साहनी

- जन्म एवं जीवन परिचय -
  - रावलपिंडी में जन्म। गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. और पंजाब विश्वविद्यालय से पीएच.डी.।
  - अध्यापन कार्य अंबाला कॉलेज, खालसा कॉलेज (अमृतसर), जाकिर हुसैन कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय)।
  - 'विदेशी भाषा प्रकाशन गृह' मास्को में भाषा के अनुवादक रहे।
  - 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। हिन्दी अकादमी ने उन्हें 'शलाका सम्मान' से सम्मानित किया।
- रचनाएँ -
  - 'भाग्य रेखा', 'भटकती राख', 'पहला पाठ', 'वाङ्च पटरियाँ', 'शोभा यात्रा', 'निशाचर', 'डायन', 'पाली' (कहानी संग्रह), 'हानूश', 'माधवी', 'मुआवजे', 'कबिरा खड़ा बाजार में' (नाटक), 'गुलेल का खेल' (बालोपयोगी कहानियाँ) आदि। नई कहानियों के कुशल सम्पादक।
- साहित्यिक विशेषताएँ-
  - भाषा-शैली में पंजाबी भाषा की सोंधी-सोंधी महक
  - कथा भाषा में उर्दू शब्दों का सहज प्रयोग
  - छोटे-छोटे वाक्यों का सफल प्रयोग करके विषय को रोचक एवं प्रभावी
  - संवादों का सटीक प्रयोग वर्णन में ताजगी ला देता है।

अथवा

विद्यापति' अथवा 'निराला' के जीवन और रचनाओं का संक्षित परिचय देते हुए उनकी कविताओं की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- विद्यापति

- जन्म एवं जीवन परिचय -
  - बिहार के मधुबनी जिले के बिस्पी गाँव में, चौदहवीं शताब्दी।
  - विद्यापति मिथिला नरेश राजा शिवसिंह के अभिन्न मित्र, राजकवि व सलाहकार थे।
  - कुशाग्र बुद्धि एवं तर्कशील।

    - साहित्य, संस्कृत, संगीत, ज्योतिष, इतिहास, दर्शन, न्याय और भूगोल के प्रकांड पंडित थे।
    - संस्कृत, अवहट्ट तथा मैथिली भाषा में रचना।
- रचनाएँ-
    - 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका', 'पुरुष-परीक्षा', 'भू-परिक्रमा', 'पदावली' आदि।
- साहित्यिक विशेषताएँ-
    - लोक भाषा में साहित्य रचना, हिन्दी के आदि कवि कहे जाते हैं।
    - उनके पद मिथिला क्षेत्र के लोक-व्यवहार एवं अनुष्ठानों में पूरी तरह रच-बस गए हैं।
    - भक्ति और श्रृंगार को एक साथ साधने का गुण
    - अद्वितीय रचना कौशल, प्रतिभा और कल्पनाशीलता
    - पदों में प्रेम और सौंदर्य की निश्चल अभिव्यक्ति

अथवा

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला

- जन्म एवं जीवन परिचय-
    - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल गाँव में।
    - दुखमय पारिवारिक जीवन - पत्नी, पिता, चाचा और बाद में पुत्री सरोज की असामयिक मृत्यु देखी।
    - मतवाला पत्रिका के साथ कार्य किया।
- रचनाएँ-
    - 'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा', 'नए पत्ते', 'बेला', 'अर्चना', 'बिल्लेसुर बकरिहा', 'इरावती' आदि
- साहित्यिक विशेषताएँ-
    - छायावाद के शीर्ष कवि
    - मुक्त छंद के प्रवर्तक
    - प्रगतिवाद और नई कविता आंदोलन के प्रणेता कवि
    - भाव एव शिल्प दोनों ही स्तर पर परिवर्तन एवं विद्रोह की अभिव्यक्ति
    - साहित्य में बंधनों तथा समाज में सामंतवाद - साम्राज्यवाद का डटकर विरोध

खण्ड-'घ'

13. "उसका मायावी कद अंदर ज़मीन में कितनी गहराई तक गया था और आसमानों में कितनी ऊँचाई तक।" भूपसिंह के बारे में उत्त कथन के आलोक में उसके जीवन के प्रेरणादायक मूल्यों की सोदाहरण चर्चा कीजिए। (5)

उत्तर- भूप सिंह के जीवन से प्राप्त प्रेरणादायक मूल्य-

- कठोर परिश्रम

- कठिन परिस्थितियों से संघर्ष की भावना
- स्वाभिमान एवं खुद्दारी
- संतोषी
- पशुओं से आत्मीयता, परिवेश से लगाव
- पुनर्निर्माण में विश्वास
  (अन्य बिंदु भी स्वीकार्य, उदाहरण अपेक्षित)

14. i. **"तो हम सौ लाख बार बनाएँगे।" इस कथन के संदर्भ में 'सूरदास' का चरित्र चित्रण कीजिए। (5)**
ii. **'बिस्कोहर की माटी' में ऐसा क्या था कि लेखक को वह भुलाए नहीं भूलती? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (5)**
उत्तर-

i. सूरदास का चरित्र-
   - सकारात्मक प्रवृत्ति
   - झोपड़ी जलाए जाने पर भी प्रतिशोध न लेना
   - पुनर्निर्माण में विश्वास
   - कर्मशील
   - क्षमा, परोपकार एवं अन्य मानवीय मूल्यों से युक्त
   - व्यक्तित्व में धैर्य, सहृदयता, संवेदनशीलता, आत्मविश्वास और आशावादिता जैसे गुण
   - संकल्प का धनी

ii.
   - बिस्कोहर का सादा रहन-सहन
   - वहाँ की प्रकृति और उसमें आने वाले
   - परिवर्तनों का जीवन पर प्रभाव
   - विभिन्न प्रकार की वनस्पति, हरी-भरी भूमि, जीव-जन्तु, फल-फूल-सब्जियाँ आदि की गंध एवं ध्वनियाँ
   - ग्रामीण जीवन के विविध प्रसंग, देशी इलाज के नुस्खे
   - गर्मी, बारिश, नदी-नाले, पोखर के दृश्यों की स्मृति
   - बिस्कोहर के साथ ही माँ की स्मृति, ममता के विविध प्रसंगों का जुड़ाव